इतिहास एवं संस्कृति स्पर्शबोध
(डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा पर केन्द्रित)

सम्पादक: **डॉ. मोहम्मद फारूक चौहान**
प्रकाशक: **विकास प्रकाशन, बीकानेर**
प्रकाशन वर्ष: **2019**
मूल्य: **600 रुपये**

डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा जिन पर यह ग्रन्थ केन्द्रित है राजस्थान केआधुनिक काल के साहित्य एवं संस्कृति, कला एवं इतिहास स्त्रोतों के अध्येता रहे है। मुझे इनकी इतिहास, कला एवं संस्कृति विषयक कृतियों को पढ़ने का अवसर मिला। आप एक पुरालेख शास्त्री होने के नाते अपनी शोध कृतियों में किसी भी गंभीर निर्णायक टिप्पणियों से बचते ही रहे हैं। आपका मुख्य उद्देश्य अध्येताओं को उनके शोध विषय पर पहुंचने में सहयोगी स्त्रोतों से अवगत करवाना रहा है। उनकी पिछले पचास वर्षों की राजस्थान की संस्कृति, कला एवं इतिहास साधना को लेकर ग्रन्थ सम्पादक डॉ. मोहम्मद फारूक चौहान ने अपनी प्रकाशित कृति ''इतिहास एवं संस्कृति स्पर्शबोध (डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा पर केन्द्रित)'' के रूप में एक सार्थक प्रयास किया है। यह ग्रन्थ डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संक्षिप्त परिचय के साथ बारह अध्यायों में विभक्त है। यद्यपि प्रारम्भिक पृष्ठों में ग्रन्थ की प्रस्तावना व भूमिका में भारत की लोक संस्कृति एवं इतिहास के विद्वान सर्व श्री विजय वर्मा व डॉ. भंवर भादानी ने डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व की जो पृष्ठभूमि प्रस्तुत की है, वह ग्रन्थ की महता प्रारम्भ में ही दर्शा देती है।

आलोच्य ग्रन्थ का प्रथम अध्याय 'विरासत', दूसरा अध्याय 'साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास का प्रारम्भिक बोध, विभागीय गतिविधियों के माध्यम से', तीसरा अध्याय राजस्थान के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास से

सम्बन्धित रचना कार्य, चौथा अध्याय विभिन्न राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रस्तुत शोध आलेखों एवं समीक्षाओं की विस्तृत तालिका, पांचवें अध्याय में देश की विभिन्न हिन्दी व राजस्थानी भाषा की शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेखों एवं समीक्षाओं की तालिका, छठे अध्याय में आकाशवाणी, बीकानेर से हिन्दी व राजस्थानी भाषा में वार्ताओं की तालिका, सातवें अध्याय में डॉ. शर्मा द्वारा विरचित कुछ शोध आलेखों का मूल पाठ', आठवें अध्याय में 'मेरे कुछ अकादमिक संस्मरण (डॉ. शर्मा की कलम से), नवें अध्याय में डॉ. शर्मा द्वारा रचित कुछ कहानियों एवं काव्य रचनाओं का मूल पाठ, दसवें अध्याय में डॉ. शर्मा का शोध एवं साहित्यिक संस्थानों से जुड़ाव, ग्यारहवें अध्याय में डॉ. शर्मा को विभिन्न शोध एवं साहित्यिक संस्थाओं द्वारा प्रदत्त सम्मान, बारहवें अध्याय में चित्रवीथी अध्याय डॉ. शर्मा के साहित्य, संस्कृति व इतिहास बोध को बिना किसी लाग लपेट के एवं उनके सृजन पर प्रशासनात्मक टिप्पणी के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर, सम्पादन कार्य की महत्ता को बढ़ाया है। अन्यथा ऐसे ग्रन्थ प्रशंसात्मक टिप्पणियों से बोझल कर दिये जाते हैं। इससे यह ग्रंथ किसी भी रूप में अभिनन्दनात्मक रूप न लेकर एक शोध ग्रन्थ के रूप में चर्चित हो गया।

प्रो. रवीन्द्र कुमार शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)